चमकै-बिजुरिया

बरसात की अंधेरी रात में बादलों की गरज के साथ पूरे आकाश को चीरती एक रेखा कौंध जाती है। इसी 'बिजुरिया' की चकाचौंध को कहीं-कहीं हमारा रीतीकालीन काव्य दिखाता है। दादुर, मोर, पपीहा, कोयल, सब राग और नृत्य को आतुर हो उठते हैं। वर्षा की रिमझिम प्रारंभ हो जाती है। प्रियतम अपनी प्रेयसी को निहारते चन्द्र-चकोर की कल्पना में डूबा है, तभी आकाशीय चकाचौंध के साथ घर की बिजली चली जाती है। बाहर निपट अंधेरे में पपीहे का, और घर में प्रिये का विरही स्वर गूंजता है--पी ऽ ऽ कहाँ--पी ऽ ऽ कहाँ!

तत्वज्ञानी कहते हैं कि तारों के बीच कौंधने वाली, और तारों के बीच बहने वाली बिजली एक है। दोनो में शार्क् है, प्रकाश है, दोनों क्षणिक हैं ; कब प्रगट हों, कब विलुप्त हों इसका ठिकाना नहीं। जैसे आकाश की बिजली, वैसे घर की। कब चमके, कब लुप्त हो जाये, उसकी मरजी है। बिजली छूने से झटका देती है, जाने से झटका देती है। सबको झटका देती है - आम आदमी, किसान, उद्योगपति, नेता, सरकार, सबको। बटन दबाने से लट्टू जलता है, बटन दबाने से सरकार गिर जाती है। ऐसे हादसे होने लगे हैं। जनता बार-बार बटन दबाती है, बिजली नहीं आती। फिर एक बार बटन दबता है, तो नेताओं का सूपड़ा साफ हो जाता है। बिजली के कारण एक सरकार गिरी, तो कवि-हृदय द्रवित हो उठा, "हाय री बिजुरिया, तू कैसे-कैसे नर-पुंगवों को लील गई!"

इसीलिये जो समझदार हैं, वो बिजली से पाँच हाथ दूर खिसक रहें हैं। नियम बन रहा है, कि सत्ता से चिपकना है, तो बिजली से मत चिपको। हर पावरफुल आदमी कह रहा है- पावर यानि विद्युत का निजीकरण कर दो। कोई सरकार बिजली को अपने पास नहीं रखना चाहती। प्रगति-रथ को दौड़ाना है, मगर सारथी दूसरे रहें, शब्द-भेदी बाण अपन चलाते जायें यही नीति है! कभी कहा जाता था हमारे मध्यप्रदेश में; कि समस्या हल करना हो, तो चंबल का इलाका उत्तरप्रदेश में मिला दो। राजनीति ने करंट मार-मार कर सिखाया है। बिजली एक बड़ा भारी 'वोट-काटू' फैक्टर है। चौबीस घन्टे बिजली रहे, तो उसके नाम पर एक सिंगल वोट भी नहीं बढ़ता।

Scanned by CamScanner

लोड-शेडिंग होने लगे तो, राजनैतिक अंधेरा छा जाता है। आज का नारा है, कि बिजली प्राइवेट-सैक्टर में दे दो। शासकीय प्रसूति-गृह में बिजली पैदा नहीं हो रही? कोई बात नही, प्राइवेट-क्लीनिक में सीजेरियन से बिजली पैदा कर लेंगे। वैसे भी कायदा है, कि जिस समस्या का हल ना निकले, उसे 'राष्ट्रीय-समस्या' घोषित कर दो। अब राष्ट्र जाने, और समस्या जाने। हमारे कर्णधार खड़े हाथ झड़ा के !

आज सब राज्य पड़ोस से बिजली मांग रहे हैं, या सेन्ट्रल-पुल से। पड़ोसन भी अक्सर एक कटोरी शक्कर मांगती रहती है। अभी बिजली विदेशों से इंपोर्ट नहीं हो रही। जब पेट्रोल, डीजल, कारखाने, टैक्नोलॉजी आ रही है, तो बिजली क्यों नहीं? सबका 'प्राइम-मूवर' तो बिजली है। सबकुछ आ रहा है, बिजली का अकाल पड़ता जा रहा है। जरा सी गलती हो गई। डिमांड बढ़ाते गये, सप्लाई बढ़ाना भूल गये। कोई बात नहीं। अब प्यास लग रही है, तो अब खोद लेते हैं कुँआ! हमारे देश में एक लाख मेगावाट बिजली पैदा होगी, मगर किस सन में? शीघ्र निर्णय लिया जायेगा।

घर की बिजली आते-आते जाती है, और जाते-जाते आती है। सेन्सेक्स की तरह कभी तेज, कभी मंदी, कभी पुरानी राजनीति के दिये की तरह, कभी लालटेन जैसा, कभी उगते सूरज सी, कभी डूबते सूरज की तरह। उपभोक्ता वोल्टेज की शिकायत करता है। जवाब मिलता है - माल पसंद नहीं, तो वापस कर दो! उपभेक्ता- कानून है ना।
उपभोक्ता चौंक पड़ता है।
बिजली वाला आराम से कहता है, " क्वालिटी ठीक नहीं? वापिस कर दो। वहाँ लौटा देते हैं, जहाँ से आई है। मशीन उल्टी घुमाकर कोयला वापिस खदान में, पानी वापिस नहर में, तेल वापिस टंकी में, और हम वापिस अपने घर; मगर....."
इस 'मगर' के साथ वह अपनी तर्जनी पिस्तौल की तरह तानता है,

"मगर, तेरा क्या होगा कालिये?"

उपभोक्ता सहम जाता है। वह लाचार है। नईं मामा से, काने मामा भले! नईं बिजली से दिया-बिजली भली, लालटेन-बिजली भली! बिजली की महिमा अनादि-अनंत!

Scanned by CamScanner

पुनि-पुनि जानी, पुनि-पुनि आनी,

बिजली महिमा, हम का जानी।।

बिजली संकट के कारण हाहाकार मचा है। बिजली चाहिये। जहाँ से भी मिले, जैसे भी मिले। बिजली चाहिये- कोयले से, गैस से, तेल से, हवा से, सूरज से, एटम से, कचरे से, गोबर से, रतनजोत से..... या फिर इनवर्टर से। इनवर्टर से, याने मदर-बिजली से मिनी-बिजली पैदा करना। यह आखिरी, जजकी वाला उपाय सबसे भरोसेमंद है। इसमें सात-आठ घन्टे की गारंटी रहती है।

आज सारे देश में ग्रामीण विद्युतिकरण का कार्यक्रम जोर-शोर से चल रहा है। हर गांव को बिजली देना, हर खेत के लिये मोटर-कनेक्शन देना, आज लक्ष्य बन गया है। ग्रामीण-मानस में आज बिजली गहरे पैठ गई है। लोकगीतों में बिजली आ गई है। ब्याह, शादी, मंगल-उत्सवों में ढ़ोलक की थाप पर महिलायें बिजली-गीत गाती हैं। गीत चलता जाता है, चलता जाता है। फेरे पड़ने से लेकर, बच्चे की 'हुआँ-हुआँ' होने तक। ब्याह गीत, सौरी-गीत बन जाता है -

" खम्बे गड़ने लगे,
तार खिंचने लगे,
.....बिजुरी वाला ना आया तो मैं का करुँ? "
– वह अभी तक नहीं आया है।

उम्मींद करें, कि बच्चे के 'बन्ना-बन्नी' बनने तक आ जाऐगा।

Scanned by CamScanner